रंजुमोनी सैकिया
अकादेमी पुरस्कारः सत्रिय

RANJUMONI SAIKIA
Akademi Award: Sattriya

असम के जोरहाट में 10 अक्टूबर 1967 को जन्मी, श्रीमती रंजुमोनी सैकिया ने अपने पिता, राशेश्वर सैकिया बोरबयान से पाँच साल की उम्र में ही सत्रिय नृत्य सीखना शुरू कर दिया था। श्रीमती सैकिया को पिता द्वारा सत्रिय नृत्यकला के शुद्धतम रूप में प्रशिक्षित किया गया है। आप सत्रिय नृत्यांगना, कोरियोग्राफर, प्रसिद्ध गुरु और सत्रिय नृत्य और संस्कृति की जागरुक शोधार्थी हैं। आपके पिता वह पहले व्यक्ति थे जिन्होंने सत्रिय नृत्य का द्वारा महिलाओं के लिए खोला था और अब आप उन्हीं के महत्वपूर्ण कार्यों को आगे बढ़ा रही हैं।

आप रसराज सत्रिय संगीत विद्यालय की प्रधानाचार्या और सत्रिय संगीत की शिक्षिका हैं। आप पहली सत्रिय नृत्यांगना हैं, जिसने केवल महिला कलाकारों के साथ अंकिया भाओना को मंचित करने की चुनौती स्वीकार की थी और ऐसा करके दिखाया भी था। आपने माटी अखोरा नामक पुस्तक की रचना की है जो सत्रिय नृत्य के सैद्धांतिक अवलोकन पर आधारित है। आपका मुख्य उद्देश्य अपने पिता की प्रशिक्षण पद्धति के अनुरूप सत्रिय नृत्य का प्रचार–प्रसार करना और इसे लोकप्रिय बनाना है ताकि असम में लोग इस नृत्य रूप से अवगत हो सकें और इसे सीखने को उद्धत हो सकें।

श्रीमती रंजुमोनी सैकिया को कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है जिनमें देबधर पुरस्कार (2016) और कामेश्वरी नृत्य सम्मान (2023) प्रमुख हैं।

श्रीमती रंजुमोनी सैकिया को सत्रिय नृत्य में योगदान के लिए वर्ष 2019 के संगीत नाटक अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है।

Born on 1 October 1967 in Jorhat, Assam, Shrimati Ranjumoni Saikia started training in Sattriya dance at the age of five under her father, Rasheswar Saikia Borbayan, who trained her thoroughly to master the art in its purest form. Ranjumoni is a Sattriya dancer, choreographer, noted Guru and research scholar of Sattriya dance and culture. She is carrying forward the pioneering work of her Guru and father who taught this dance to women also.

She is the principal of Rasaraj Sattriya Sangeet Vidyalaya and teacher of Sattriya Sangeet. She took up the challenge to stage for the first time the Ankiya Bhaona with women artists only. She is the author of the book Mati Akhora, a theoretical overview of Sattriya dance. Her main aim is to propagate and popularize Sattriya dance on the line of her father's training to see that people in Assam become aware of this form and learn the same.

Shrimati Ranjumoni is the recipient of the Debodhara Award (2016), and the Kameshwari Nritya Samman (2023).

Shrimati Ranjumoni Saikia receives the Sangeet Natak Akademi Award for the year 2019 for her contribution to Sattriya dance.